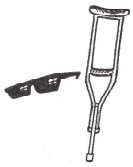

अध्याय–12
मान गए लोहा

74GQGS

सुखदा और संजय तेजी से विद्यालय की ओर जा रहे थे।

''दीदी वो देखो! हमारे विद्यालय की दीवार पर बच्चे कुछ पढ़ रहे हैं'', संजय ने सुखदा से कहा। हाँ, चलो दोनों दौड़कर छात्रों के बीच पहुँच गए।

विद्यालय की दीवार पर लगे पोस्टर को सभी बच्चे पढ़कर आपस में बाते कर रहे थे।

तभी शिक्षक भी वहाँ पहुँच गए। चलो बच्चों, अपनी–अपनी कक्षाओं में चलो। आप सबको कक्षा में इसके बारे में बताया जाएगा।

कक्षा में शिक्षक ने सभी बच्चों से पूछा– ''आपको इस पोस्टर को पढ़कर क्या सूचना मिलती है?

नरेश ने बताया –ऐसे व्यक्ति जिन्हें देखने, सुनने, बोलने, चलने आदि में कठिनाई होती है, उनके लिए विश्व विकलांगता दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

सुखदा बोली–'' कुछ लोगों में ऐसी कठिनाई होती क्यों है?''

शिक्षक ने बताया– ''कभी–कभी दुर्घटना या बीमारी के कारण कुछ लोगों के शारीरिक बनावट मे भिन्नता उत्पन्न हो जाती है। कभी–कभी कुछ शारीरिक भिन्नता जन्मजात भी होती हैं। इन भिन्नताओं के बावजूद ऐसे व्यक्ति हमारी तरह न केवल अपने सारे दैनिक कार्य करते हैं, बल्कि कई ऐसे कार्य भी कर सकते हैं, जो हम नहीं कर सकते हैं।''

आस्था ने कहा– ''हाँ, मैंने भी अखबार में हाथों से निःशक्त एक लड़की को पैरों की अँगुलियों से कलम पकड़कर लिखते हुए का फोटो देखा था। उसने पैर से लिखते हुए बोर्ड की परीक्षा दी व पास हुई।''

शिक्षक ने बताया– ''मैं पहले नेत्रहीन बच्चों के विद्यालय में पढ़ाता था। वहां के बच्चों ने विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर शिक्षक की मदद से एक नाटक प्रस्तुत किया था। सभी ने उसे बहुत सराहा था।''

शारीरिक बनावट में भिन्नता के बावजूद लोग क्या क्या कर लेते हैं? लिखिए

____

____

____

सोचकर लिखिए कि वे लोग यह सब कैसे कर पाते होंगे?

____

____

रोज़ की तरह रात के खाने के बाद सुखदा और संजय दादाजी के पास पहुँचे और विद्यालय की बातें बताने लगे। दादाजी ने सभी बातें बड़े ध्यान से सुनीं और कहा– ''कल रविवार है मैं आप लोगों को नेत्रहीन आवासीय विद्यालय ले चलूँगा।''

दूसरे दिन सुखदा और संजय, दादाजी के साथ राजकीय नेत्रहीन आवासीय विद्यालय गए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय एक शिक्षक के साथ आए और सबका अभिवादन किया। सुखदा ने देखा प्रधानाध्यापक काला चश्मा लगाए थे। हाथों में लाल एवं सफेद रंग की छड़ी थी।

प्रधानाध्यापक– ''आइए, हम सबसे पहले छात्रावास चले।''

सुखदा और संजय सोच रहे थे पता नहीं नेत्रहीन बच्चे कैसे रहते होंगे?

छात्रावास में सभी छात्र अपने–अपने काम में लगे थे। कुछ कपड़े धो रहे थे। कुछ सामान्य लोगों की तरह स्नानघर और अपने कमरे की ओर आ जा रहे थे। छात्रावास में उनके बिस्तर, पुस्तकें आदि ढंग से सजे थे।

संजय ने पूछा, ''ये गीत–संगीत की आवाज़ कहाँ से आ रही है?'' प्रधानाध्यापक ने बताया कि यह आवाज संगीत कक्ष से आ रही है। हम वहीं चल रहे हैं।

संगीत कक्ष में 8–10 बच्चे तबले, हारमोनियम आदि पर गा बजा रहे थे।

प्रधानाध्यापक– ''वैसे तो इस विद्यालय के प्रायः सभी विद्यार्थी गीत–संगीत में रुचि रखते हैं। परन्तु कुछ विद्यार्थी तो गायन–वादन में बड़े निपुण हैं। उन्होंने जिला और राज्य स्तर पर कई पुरस्कार जीते हैं।''

एक दूसरे कमरे के ऊपर पुस्तकालय का बोर्ड लगा था। वहाँ मोटी–मोटी पुस्तकें सजा कर रखी थीं।

दादाजी– ''देखो, सुखदा ये पुस्तकें ब्रेल–लिपि में लिखी हैं। ब्रेल–लिपि एक खड़े आयताकार स्लेट में छः बिन्दुओं को उभारकर लिखा जाता है। नेत्रहीन बच्चे इन उभरे बिन्दुओं को अँगुलियों के स्पर्श से समझ जाते हैं।''

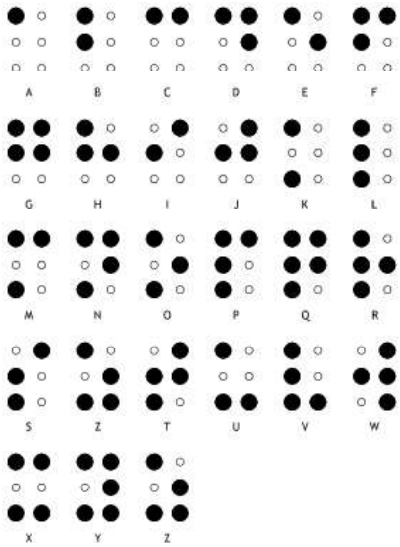

सुखदा और संजय यह सब जानकर बड़े प्रभावित हुए।

नेत्रहीन बच्चे छात्रावास में क्या–क्या कर रहे थे?

_____

_____

_____

नेत्रहीन बच्चे कैसे पढ़ते हैं?

_____

_____

_____

3 दिसम्बर को विश्व विकलांगता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों के साथ सुखदा, संजय व विद्यालय के सभी बच्चे पहुँचे। नगर भवन में लगी कुर्सियों पर विभिन्न प्रकार के शारीरिक चुनौतियोंवाले व्यक्ति बैठे थे । दीवारों पर विभिन्न प्रकार के पोस्टर व बैनर लगे थे। इन पर समाज कल्याण विभाग के द्वारा निःशक्त व्यक्तियों एवं छात्र–छात्राओं के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई थी। छात्र–छात्राओं को दी जानेवाली सुविधाओं के बारे में भी जानकारियाँ थी।

विश्व विकलांगता दिवस के अवसर पर शारीरिक चुनौती वाले व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। पोलियोग्रस्त इकबाल अहमद ने सबसे ज्यादा पुरस्कार जीते। उसके चेहरे से आत्मविश्वास और खुशी झलक रही थी।

मंच से उतरते ही बच्चों ने इकबाल को घेर लिया। सुखदा ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा भैया, मान गए आपका लोहा!

सुखदा ने इकबाल अहमद को ऐसा क्यों कहा, ''भैया, मान गए आपका लोहा?''

लोहा मानना– कठिन से कठिन काम कर पाने की क्षमता को मानना।

खेल–खेल में

पक्षियों से दोस्ती

पक्षी तो हर जगह दिखाई देते हैं। क्या आपने कभी इनको ध्यान से देखा है?

पक्षियों को देखना, पहचानना तथा उनका अवलोकन करना बहुत ही दिलचस्प अनुभव है। पक्षियों के बारे में देखने को बहुत कुछ है। जैसे– आकार, रंग–रूप, बोली, आदतें, भोजन आदि। कई लोग इसे एक शौक के रूप में अपनाते हैं। इस शौक को पक्षी की दुनिया में ताक–झाँक या 'बर्ड वाचिंग' कहते हैं।

पक्षी दर्शन के लिए आप एक अलग डायरी या कॉपी बना सकते हैं। हर पक्षी के लिए एक अलग पन्ना रखना अच्छा रहेगा। आपको पक्षी के बारे में जो भी जानकारी मिले या पता चले उसको इस पन्ने पर लिखते जाइए।

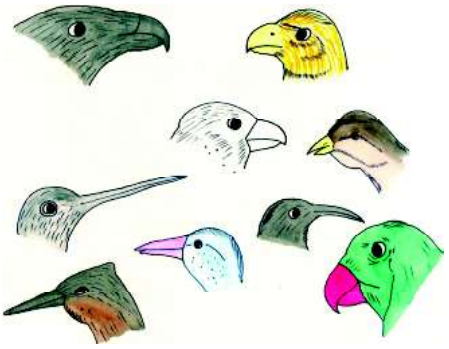

पन्ने पर सबसे ऊपर पक्षी का नाम लिखिए। यदि संभव हो, तो पक्षी का चित्र ढूँढकर अपने द्वारा इकट्ठी की गई जानकारी के साथ चिपका दीजिए। अगर ऐसा नहीं कर पाते हैं तो, चित्र बनाने की कोशिश कीजिए।

पक्षियों के अवलोकन में मदद के लिए कुछ और सुझाव निम्नलिखित हैं :

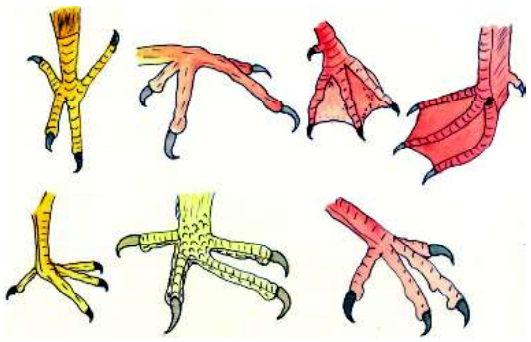

लंबाई: पक्षी लगभग कितना लंबा है? पक्षियों की लंबाई की तुलना गौरैया या कौए किसी जाने–पहचाने पक्षी से की जा सकती है।

रंग: क्या पक्षी का पूरा शरीर एक ही रंग का है? सीना सादा है या धब्बेदार, या फिर चित्तियोंवाला? क्या पूँछ पर भी चित्तियाँ हैं? पंख एक ही रंग के हैं या उन पर भी चित्तियाँ हैं?

आँखः पक्षी की आँखें क्या गोल लकीर से पूरी घिरी हैं? या केवल आँखों के ऊपर ही लकीर है? आँखों का रंग कैसा है?

चोंचः चोंच कैसी है – लंबी, छोटी, नुकीली या मुड़ी हुई?

पूँछः पूँछ की लंबाई? पूँछ का सिरा नुकीला है, गोलाकार है या चौकोर? क्या पक्षी पूँछ हिलाता रहता है? क्या वह पूँछ खड़ी करता है या नीचे ही रखता है?

पंखः पंख गोलाकार हैं या नुकीले? इसके लिए उड़ते हुए पक्षियों को देखना जरूरी होगा। संभव हो तो फैले हुए पंखों का चित्र भी बनाइए।

आवाजः पक्षी की आवाज ध्यान से सुनिए। आवाज की मदद से आप पक्षियों को जल्दी पहचान सकते हैं। अगर हो सके तो उसकी आवाज की नकल करने की कोशिश भी कर सकते हैं।

आवासः वह अक्सर कहाँ दिखाई देता है – खेत में, पानी के पास, पेड़ पर, झाड़ियों में या फिर बिजली के तारों पर? क्या पक्षी किन्हीं खास पेड़ों पर ही बैठता है?

भोजनः पक्षी क्या खाता है– कीड़े–मकोड़े, दाने, मांस, अनाज या फल?

मौसमः अक्सर किस मौसम में आपको वह पक्षी दिखाई देता है?

पक्षियों को ध्यान से देखने और उनके अवलोकन अपनी डायरी में नोट करने में आपको मदद मिले इसके लिए उदाहरण के तौर पर खंजन पक्षी का विवरण आगे दिया है।

खंजन

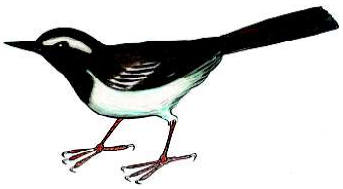

लंबाई : लगभग 21 से.मी. (गौरैया से थोड़ी बड़ी)

रंगः पीठ और सिर का रंग नर में काला और मादा में धूसर। पेटवाला भाग सफेद। पूँछ के बीच में काली पट्टी और दोनों किनारों पर सफेद पट्टी। आँखों के ऊपर सफेद भौंह जैसी पट्टी।

पूँछः लंबी, पतली, आयताकार।

चोंचः छोटी, पतली, नुकीली।

आवाजः पतले स्वर में ट्जीट–ट्जीट। कई तरह की सीटी जैसी मधुर बोलियाँ बोलता है। प्रजनन काल में नर सुरीला गीत गाता रहता है।

भोजनः कीड़े–मकोड़े।

आवासः मुख्यतः जमीन पर। आम तौर पर नदी के किनारे या किसी तालाब या पानी से भरे खेत के किनारे बैठा देखा जा सकता है।

अन्य जानकारीः अधिकतर जोड़ी में दिखता है। वैसे कभी–कभी छोटे झुंडों में भोजन करते हुए भी देखा जाता है। चहचहाते समय पूँछ को ऊपर नीचे करता है। पानी के किनारे बैठकर लगातार पूँछ हिलाते हुए भोजन करता है।

नर और मादा में अंतर रंग के आधार पर किया जा सकता है।